चावल की देग में साँप

एक बार सुथरे शाह जी को एक मुसलमान फकीर ने कहा- शाह जी! कभी हमारे साथ बैठकर भी खाना खाओ। सुथरे शाह जी ने कहा ठीक है पर हमारा कुत्ता भी साथ बैठकर खाएगा। उस फकीर ने यह बात मान ली। जब सुथरे शाह जी फकीर के यहाँ पहुँचे तो खाना लाकर सुथरे शाह जी के सामने रखा गया। उन्होंने चावलों की थाली कुत्ते के सामने रख दी। कुत्ता चावल सूँघ कर भौंकने लगा। 'सुथरे शाह जी' ने कहा यह खाना ठीक नहीं इसमें ज़हर मिला हुआ है। यह सुनकर फकीर को गुस्सा आ गया कि हमारे ऊपर शक किया जा रहा है। खाना न खाने का बहाना बनाया जा रहा है। क्योंकि सुथरे शाह जी एक हिन्दू फकीर हैं और वह एक मुसलमान के हाथ का खाना नहीं खाना चाहते।

सुथरे शाह जी ने कहा जिस देग में चावल बने हैं उस देग में से सारे चावल निकालकर एक परात में डाल दो, हम इकट्ठे एक ही परात में से खाना खाएँगे। जब उस देग के चावल एक ही परात में उड़ेले गए तो सभी ने देखा कि एक जहरीला साँप उन चावलों में उबला पड़ा था। इसे देखकर मुसलमान फकीर हैरान रह गया और उसने सुथरे शाह जी से माफी माँगी कि हमें इस बात का पता नहीं था। पर यह बात आपके कुत्ते को सूँघने से पता चल गई। तभी उसने चावल सूँघ कर छोड़ दिए। इस कुत्ते के कारण इस परिवार के सदस्य भी जहरीला खाना खाने से बच गए।